ॐ नारायण

# दोहों में उपदेश

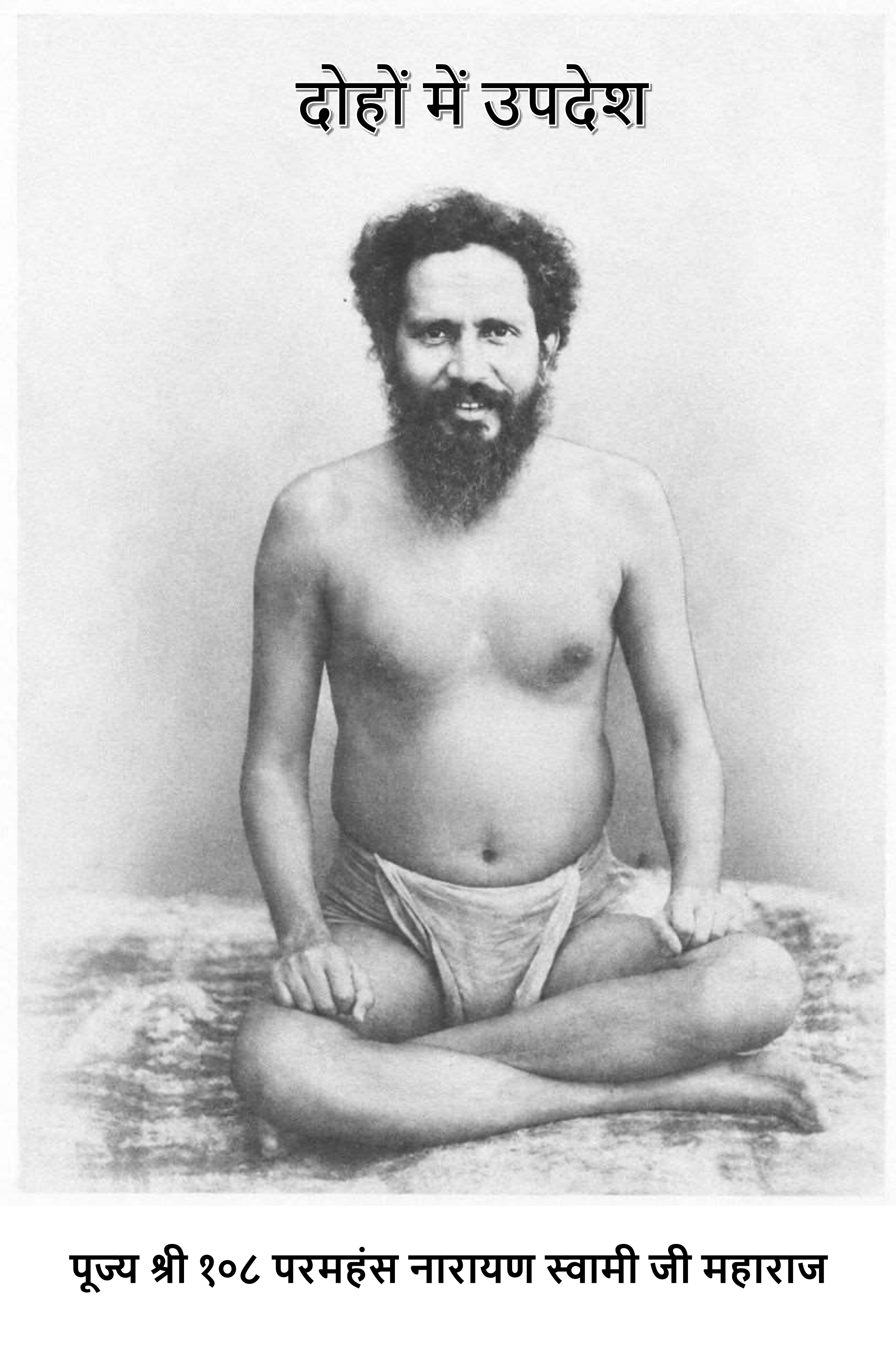

**पूज्य श्री १०८ परमहंस नारायण स्वामी जी महाराज**

## हर प्रकार का

# उपदेश

## दोहों में

## नारायण दास परमहंस

***मूल्य* : *प्रेम***

**संस्करण: 2026**

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

**प्रकाशक: अभिराम गौर सुन्दर दास,**

**(अभिषेक माथुर)**

**जयपुर**

**दूरभाष : 9828899001**

**पूर्व प्रकाशन के लिए आभार:**
**स्वामी नर नारायण दास परमहंस**
**C/o, श्री पूरनचन्द गोस्वामी**
बिहारीपुरा, वृन्दावन

मुद्रक

**श्री प्रेम हरि प्रेस, वृन्दावन**

## ॐ नारायण

— ✱ —

# भूमिका

धन्यवाद उस शुद्ध सत् चित् आनन्द ब्रह्मस्वरूप आत्मा नारायण विष्णु भगवान् को जिन्होंने अपने संकल्प से चौदह लोक की रचना की, अनेक रूप से लीला कर रहे हैं- साकार रूप की लीला करने के लिये वेद शास्त्रों ने मृत्युलोक के मनुष्यों के लिये नीति बनाई है- उस नीति के अनुसार जगत् के कार्य करने के लिये आज्ञा दी है।

*जो अनीति पर चलते हैं उनको पाप लगता है -नीति पर चलनेवालों को पुण्य मिलता है।*

हर मनुष्य को भला बुरा पहिचानने के लिये भगवान ने बुद्धि दी है, परन्तु जीव जन्म-जन्मान्तर के पापों की मलीनता के कारण माया लीला में अधिक लीन रहकर पाप कर्म अधिक करता है। इस जीव को समझाने के लिये सत्संग, कथा-वार्ता, कीर्तन इत्यादि साधन बतलाये गये हैं, जिससे मन ठाकुर-सेवा, भजन व शुभ कर्म इत्यादि में लगा रहकर जगत् असत् से हटकर भगवान के चरणों में भी लगा रहे केवल जगत् के कार्य करने में ही न लगा रहे, लोक-परलोक दोनों का सुधार करे ।

गृहस्थियों को सत् उपदेश की सदा आवश्यकता रहती है, नीति के अनुसार शुभ कर्म करते रहें, धीरे-धीरे दो-चार जन्म में भगवत्-प्राप्ति हो जावेगी ।

साधु होने के बाद यह दास मौन व्रत रखने पर भी लिखकर इशारे से पुस्तक के द्वारा गृहस्थियों को उपदेश करता ही रहा है, परन्तु थोड़े दिनों से काष्ठ मौन-व्रत रखने से उपदेश नहीं कर सका, इसो कारण दोहे बनाकर हर प्रकार की नीति धर्मशास्त्रों के अनुसार बतलाई है, थोड़े शब्दों में अर्थ अधिक समझ में आता है, धीरे - धीरे थोड़ा थोड़ा पढ़ने से शब्दों के अर्थ का आनन्द आता है, जल्दी - जल्दी पढ़कर पुस्तक पूरी करने से कुछ लाभनहीं मिलेगा ।

इस छोटी-सी पुस्तक को नित्य नियम से दूसरे गृहस्थियों के साथ विचार से, थोड़ा-थोड़ा पढ़ने से बहुत लाभ होगा, मन के ऊपर प्रभाव अधिक पड़ेगा ।

इस दास ने कोई नई बात नहीं लिखी है, दिन रात के वर्ताव में आ रही है, परन्तु माया के चक्कर में आकर जीव जान-बूझकर पाप कर्म में पड़ जाता है।

— ✱ —

ये दोहे केवल इस कारण से बनाये हैं कि शुभ कर्म करने की याद आती रहे, भूल न होने पाये, अभ्यास में आते रहें, धर्म पर चलने के लिये मन को ताड़ना होती रहेगी, नित्य नियम से पाठ करने ही से याद आती रहेगी। मन की मलीनता दूर हो जावेगी। जो भक्तजन इन दोहों पर विचार करके थोड़ा भी अभ्यास करेंगे तो वे धार्मिक, पुण्यवान् नीति पर चलनेवाले वैकुण्ठ के अधिकारी बनेंगे, लोक-परलोक दोनों का सुधार होगा ।

इस पुस्तक का मूल्य प्रेम रखा है, हर मनुष्य जो चाहे इसे मुफ्त में छपवाकर बिना मूल्य के बाँट सकते हैं, परोपकार का काम समझना चाहिये ।

दूसरा उपाय यह भी रखा है कि जिस प्रेस में यह पुस्तक छपेगी उस प्रेस से छपवाकर मंगवा सकते हैं। केवल छपाई और कागज का लागतमात्र मूल्य अलावा महसूल डाक के लगेगा।.

जो भक्तजन चाहें मंगवाकर बांटें या आप दूसरी जगह जहाँ चाहें छपवा लें । परन्तु जिल्द कागज छपाई नमूने के अनुसार अच्छी होनी चाहिये । वर्तमान समय में प्रायः छोटे-बड़े सब मनुष्यों की आँखों की रोशनी कम होती चली जा रही है, इसी कारण मोटा अक्षर छपाया गया है जो बिना चश्मे के हर समय पढ़ने में आ सके और नेत्रों को कुछ भी परिश्रम न हो छपाते समय इसीबात का विचार रखने की आवश्यकता है।

- **नारायणदास परमहंस**

— ✱ —

# ॐ नारायण

# दोहे

( १ )

'नारायण' कहे जो भजन करे, अमर पदवी को पाय ।
रटन करे उस नाम की, जीवन मुक्त हो जाय ।।

( २ )

महिमा प्रभुके नाम की, को कर सके बखान ।
'नारायण' सब पाप हरें, बन जाय सुघड़ सुजान ।।

( ३ )

नाम बड़ा भगवान से, हृदय शुद्ध करे मलीन ।
'नारायण' सुख दोनों लोकका मिले, प्रभु चरण आधीन ।।

( ४ )

नाम जपा जिसने सदा, शुभ कर्म के साथ ।
'नारायण' रूप उनको जानिये, भगवान रहे हैं साथ ।।

— ✱ —

( ५ )

अधिक बोलना छोड़दो, पापों से बच जाय ।

'नारायण' नाम का जप करो, जीवन मुक्त हो जाय ।।

( ६ )

नाम जप जिसने किया, पीड़ी इक्कीस तर जाय ।

'नारायण' धन्यवाद उस पुरुषको, बैकुंठधाम लेजाय ।।

( ७ )

जीवन भक्तजन संसार में, अपार अमोल दिखाय ।

'नारायण' उपदेश करे संसार में, भक्ति हरी फैलाय ।।

( ८ )

निदा चोरी जूआ संसार में, फैल रहा दिखाय ।

'नारायण' बच्चो इस पाप से, सीधा नरक लेजाय ।।

( ९ )

गृहस्थ में चिन्ता मत करो, कर्म भोगने आये ।

'नारायण' सुख-दुःख को सहो, प्रभू करें सहाये ।।

— ✱ —

( १० )

'नारायण' कलियुग समय, सुखी न देखा कोय ।

जो सुख चाहे जगत में, भजन करे सुख होय ।।

( ११ )

'नारायण' संसारमें चोरी जूआ रोग, निंदा अधिक होय ।

कलिकाल होशियार रहो, पाप कर्म नहीं बोय ।।

( १२ )

दुनियां भई है स्वार्थी, अपना भला ही चाहे ।

'नारायण' रूप सबको जानिये, द्वेष-भाव नहीं लाये ।।

( १३ )

'नारायण' कलिकाल में, निंदा अधिक दिखाय ।

बचते रहो इससे सदा, योनी चिमगादड़ में जाय ।।

( १४ )

दान भजन जो कुछ करो कहो न मुख से कोय ।

'नारायण' अपनी स्तुति को,  मूरख बन नहीं खोय ।।

( १५ )

अधिक बोलना संसार में, महापाप का मूल ।

'नारायण' कतरनी समान जिह्वा चले, नहीं करो कभी भूल

— ✻ —

( १६ )

'नारायण' कहे भजन करो, नहीं माने है कोय ।

जैसा करेगा वैसा पायगा, तू वृथा समय मत खोय ।।

( १७ )

शुभ कर्म को वेग कर, बुरे कर्मों को टाल।

'नारायण' इस जीवनका विश्वास नहीं, आज मरे या काल

( १८ )

शुभ कर्म भजन में मन नहीं, माया मोह में लीन ।

'नारायण' हरें दुःख संसारके, रहो प्रभुके आधीन ॥

( १९ )

पत्नी के बस में रहें, मात पिता से दूर ।

'नारायण' धिक्कार ऐसे पतिको, यमदूत करेंगे चकनाचूर ॥

( २० )

काष्ट मौन का साधन करूं, जीवन मुक्त आधार ।

'नारायण' दास समाधी में रहें, छूटा जगत व्यौहार ।।

( २१ )

खान-पान में मन रहे, जिह्वा 'माँगे स्वाद ।

'नारायण' कलिकाल में, होंगे सब बरबाद ।।

— ✻ —

( २२ )

जीभ चटोरी मत करो, पैसा वृथा खोय ।
'नारायण' जो खाओगे, भिष्टा ही सब होय ॥

( २३ )

पदारथ 'खान-पान की, खुली दुकान अनेक ।
'नारायण' घृणा करे, देख-देख यह भेक ।।

( २४ )

भगत जन जिनको कहो, वे तो यम के दूत ।
'नारायण' संग छोड़दो, पीछे पड़े हैं भूत ॥

( २५ )

माता-पिता ने पढ़ा-लिखा, पुत्र किया हुशियार ।
'नारायण' घर छोड़ जुदा रहें, पत्नी से करें प्यार ।।

( २६ )

'नारायण' दास संसार को, देखे दुःखी अपार ।
भजन और दान करते नहीं, खुशी नहीं करतार ।।

( २७ )

निंदा किसी की जो करे, चिमगादड़ योनी पाय ।
'नारायण' रूप जगतको जानिये, सबको शीश नवाय ।।

— ✻ —

( २८ )

निंदा किसी की मत करो, जो करेगा भोगे आप ।
'नारायण' कहे पड़ो न पाप में, मानो मेरी बात ।।

( २६ )

निंदा करे बैरी बने, सब कोई बुरा बताय ।
'नारायण' बचो इस पापसे, भगवान को न सुहाय ॥

( ३० )

निंदक को औगुन मिलें, अपने गुन घट जायें।
'नारायण' पुण्यवान पापी बन जाय, वृथा दुखी बन जायें ॥

( ३१ )

सबसे बड़ा साधन संसार में, सत्त बोलना जान ।
'नारायण' सत्तवादी बनो, जग में पाओ मान ।।

( ३२ )

बुरे कर्म होंगे नहीं, जो करो सत्त का अभ्यास ।
'नारायण' चिता रहित रहो, सुख में करियो बास ॥

( ३३ )

बड़ा तप सत्य बोलना, बने धार्मिक पुण्यवान ।
'नारायण' संसार में श्रद्धा बढ़े, अधिक गृहस्थमें मान ॥

— ✻ —

( ३४ )

'नारायण' संसार में, सत्त धर्म ही बड़ा विचार ।

सत्तवादी को चिन्ता नहीं, सोवे पैर पसार ।।

( ३५ )

'नारायण' कुटुम्ब परिवार में, सत्त का करो प्रचार ।

सत्तवादी बनें सब गृहस्थ में, रखो सदा विचार ।।

( ३६ )

कलियुग भरा है पाप से, सदा रहो होशयार ।

'नारायण' पग धरो फूंक कर, अधर्म का विस्तार ।।

( ३७ )

कर्म जाल संसार में, फैल रहा अपार ।

'नारायण' चेंटी ब्रह्मा बने, कर्मन की बलिहार ।।

( ३८ )

जैसी करनी कीजिये, मृत्युलोक में आय ।

'नारायण' प्रारब्ध वैसा बने, अच्छा बुरा फल पाय ।।

( ३६ )

प्रारब्ध बनाना सबके हाथ में, जैसा चाहो बनाओ ।

'नारायण' फिर जान-बूझकर क्यों, कीचड़में फँस जाओ ।।

— ✱ —

( ४० )

वेद शास्त्र नीति बनी, बुद्धि दई विचार ।

'नारायण' हर प्रकार से, बुरे करम न निहार ।।

( ४१ )

पालन करे कुटुम्ब का, बुरी कमाई लाय ।

'नारायण' अपने साथ में, सबही को डुबाय ॥

( ४२ )

भजन करे नित्त नेम से, पाप करे दिन रात ।

'नारायण' ऐसे भगत से, प्रभू करें नहिं बात ।।

( ४३ )

मात-पिता से प्रेम नहीं, करें पत्नी से प्यार ।

'नारायण' ऐसे पापी जीव पर, बार-बार धिक्कार ।।

( ४४ )

अनुष्ठान करूू हूँ व्रत का, छोड़ा नित्त आहार ।

'नारायण' दास सुखावे देह को, साधू धरम निहार ।।

( ४५ )

कुटुम्ब की बात माने नहीं, स्त्री कहे सो होय ।

'नारायण' ऐसी अनीति पर, देख देख दुखी होय ॥

— ✻ —

( ४६ )

स्त्रियाँ बड़ी शौकीन हुई, उत्तम वस्त्र सुहाय ।

'नारायण' पति कमाई करत-करत थक जाय ॥

( ४७ )

घड़ी हाथ में चाहिये, साड़ी नई रेशमीन होय ।

'नारायण' ऐसी स्त्रियाँ, वृथा ही पैसा खोय ।।

( ४८ )

खान पान भी उत्तम चाहिये, जिभ्या हुई चटोर ।

'नारायण' ऐसी जीभ को, डाले तुरत मरोड़ ॥

( ४६ )

स्त्रियाँ फिरें बाजार में, परदा दिया है छोड़ ।

'नारायण' लज्जा भी गई, करू प्रणाम कर जोड़ ।।

( ५० )

चलन से चलना चाहिये, मँहगा समय अपार ।

'नारायण'कुटुम्बका पालन करो, अधिक सोच विचार ।।

( ५१ )

पैसा अधिक खरच न कीजिये, लोभी नहीं बन जाय ।

'नारायण' लोभी की मुक्ती नहीं, शास्त्र लिखा बताय ।।

— ✻ —

( ५२ )

दान करे धन न घटे, चाहे जितना लुटाय ।

'नारायण' उसे भगवान मिले, साथ में धन ले जाय ।।

( ५३ )

अच्छा बुरा न देखये, दान करे भरम खोय ।

'नारायण' सबको अन्न चाहिये, वृथा पाप क्यों बोय ॥

( ५४ )

अतिथिसतकारकरना चाहिये, जो गृहस्थ के घरपरआय ।

'नारायण' खाली हाथ न जाय, वह पुन्न कुटुम्ब ले जाय ।।

( ५५ )

भजन करे और दान दे, दरश हरी का पाय ।

'नारायण' चुटकी अन्न की, वह भी फलीभूत होजाय ।।

( ५६ )

प्रेम करे तो हरी से, लोक परलोक सुधार ।

'नारायण' प्रेम् कुटुम्ब का, झूठा जगत व्योहार ॥

( ५७ )

घरवालों का मोह तो, आवागमन बँधाय ।

'नारायण' से प्रेम करो, सीधा बैकुंठ ले जाय ॥

— ✻ —

( ५८ )

'कुटुम्बियों का मोह अधिक, पाप कर्म करवाय ।
'नारायण' से बेमुख करे, जन्म-जन्म पछताय ॥

( ५६ )

अन्त समय साथी तेरा, नहीं जगत में कोय ।
'नारायण' सब देखते रह जायेंगे, यमदूत पकड़ेंगे तोय ।।

( ६० )

जीवन सुफल करना हो, हरी का भजन करो।
'नारायण' विमान बैठ कर, बैकुंठ को चलो ॥

( ६१ )

इक्कीस पीड़ी अपनी तारयो, हो मान संसार में ।
'नारायण' का दरश पाओगे, हो नाम संसार में ।।

( ६२ )

गृहस्थ साधु से भले, दान करे फल होये ।
'नारायण' साधु तप करें, दान लीला में खोये ।।

( ६३ )

भजन खजाना बना रहे, कमाई करे और खाये ।
'नारायण' शुभ कर्म करे, साथ में उनके जाये ॥

— ✻ —

( ६४ )

भजन करे मन शुद्ध हो, शुभ कर्म में जाये ।
'नारायण' का नाम जप, बुरे कर्म न सुहाये ।।.

( ६५ )

भजन कभी न छोड़यो , मन चाहे जहाँ जाये ।
'नारायण' उलटा सीधा बीज, खेत पड़े उपजाये ॥

( ६६ )

बड़ा कर्म कलिकाल में, वेद शास्त्र भजन बतलाये ।
'नारायण' नाम जो लेते नहीं, पीछे अंत समय पछताये ।।

( ६७ )

नाम की महिमा नामी से अधिक, शांति बेग दिखाये ।
'नारायण' का प्रेमी भगत बने, भगती सदा निभाये ।।

( ६८ )

जनम लिया संसार में, भजन करन को जान ।
'नारायण' बाजी जोत लो, यह घोड़ा मैदान ।।

( ६९ )

वेदान्त विचार अति कठिन, गृहस्थों से नहीं होये ।
'नारायण' की भगती सरल, वृथा समय न खोये ।।

— ✱ —

( ७० )

भगती से प्रसन्नता वेग, प्रभु की होये ।
'नारायण' सुख से करो, बीज प्रेम का बोये ॥

( ७१ )

साधन कोई कठिन नहीं, भगती में बतलाये ।
'नारायण' में प्रेम श्रद्धा चाहिये, निश्चय दर्शन पाये ।।

( ७२ )

गृहस्थ में सुख चाहे जो, भजन शुभ कर्म करे निष्काम ।
'नारायण' दुःख वेग हरें सबके, पूरन होंगे काम ॥

( ७३ )

राज चौदह लोक में, भगती का ही जान ।
'नारायण' क्यों भटकत फिरो, भगती छोड़ भगवान ।।

( ७४ )

सनातन धर्म की पालना, वैष्णव बने तब होय ।
'नारायण' सुख दोनों लोक का, बीज भगती का बोय ।।

( ७५ )

जिस घर में ठाकुर तुलसी नहीं, समझो मशान समान ।
'नारायण' वह भूमि अपवित्र है, नहीं आवें भगवान ।।

— ✱ —

( ७६ )

भगती प्रभु की कीजिये, वैष्णव सब ही बन जाय ।
'नारायण' कथा वारता व्रत को, मन में निश्चय लाय ।।

( ७७ )

वैष्णव धरम की पालना, गृहस्थ में सुख देय ।
'नारायण' अति कृपा करे, मन चाहे सो लेय ॥

( ७८ )

तुलसी की सेवा कन्या करें, वर घर अच्छा पायें ।
'नारायण' वे सदा सुखी रहें, सुसराल में मौज उड़ायें ॥

( ७९ )

जिस घर में तुलसी रहे, शुद्ध पवन हो जाय ।
'नारायण' तुलसी भोजन में डालिये, भोजन पवित्र बनाय ।।

( ८० )

तुलसी घर में राखिये अथवा, छत पर जाय लगाये ।
'नारायण' पवित्र जल शुद्ध हाथ से, कभी नहीं मुरझाये ।।

( ८१ )

तुलसी विवाह जो करे, अधिक पुन्न शास्त्र बतलाये ।
'नारायण' प्रसन्नता भगवान की, कथन में नहीं आये ॥

— ✱ —

( ८२ )

तुलसी दल का पान करे, शरीर निरोग बनाये ।

'नारायण' अति गुनदायक, औषधि में काम आये ॥

( ८३ )

जो गृहस्थ तुलसी की सेवा करें, मन वांछित फल पायें ।

'नारायण' श्रद्धा केवल चाहिये, सदा सुखी हो जायें ।।

( ८४ )

तुलसी की महिमा देखिये, बिन तुलसी ठाकुर भोगन खायें ।

'नारायण' सब देखता उपयोग करें, हरी चरणों में चढ़ायें।।

( ८५ )

कलियुग पाप का मूल है, रखो फूंक कर पैर ।

'नारायण' का रूप सब देखिये, नहीं कुछ बैर ॥

( ८६ )

पतनी कांच लेवे हाथ में, पती सँभाले बाल ।

'नारायण' लीला कलि की देख के, हँसी करे दे ताल ।।

( ८७ )

पतनी आज्ञा पती माने नहीं, सेवा नहीं चित्त लाय ।

'नारायण' अगले जन्म विधवा बने, शास्त्र यह बतलाय ।।

— ✻ —

( ८८ )

कलियुग की लीला उलटी सब, भागवत में यह बतलाये ।
'नारायण' अनीति से भरी है, हरी कृपा ही बचाये ।।

( ८९ )

चोरी जुआ बीमारी, भूषन हैं यह कलियुग के ।
'नारायण' सदा डरते रहो, प्रेमी भगत हैं कलियुग के ॥

( ९० )

माता पिता से प्रेम छोड़ के, सुसराल वालों से करें। '
नारायण' अनीति क्या कहें, सेवा पतनी में ही लगे रहें ।।

( ९१ )

श्री गंगा की महिमा अति, सब वेद शास्त्र बतलायें ।
'नारायण' गंगा तट पे कर्महीन, कूप पे नहाने जायें ।॥

( ९२ )

श्री गंगा पतित पावनी, मन में विचार न लायें ।
'नारायण' तरन तारन द्वारे खड़ी, कर्महीन रह जायें ।।

( ९३ )

गंगा में जो देह पड़े, नीच गति नहीं, पायें।
'नारायण' श्री गंग के, चरण कमल सिर नायें ॥

— ✻ —

( ९४ )

साधु संत गंगा तट रहें, भिक्षा का सुख पायें ।

'नारायण' भजन ध्यान में लीन रहे, गंगा के गुन गायें ॥

( ९५ )

बाहर से जो भगतजन, स्नान करने को आयें ।

'नारायण' श्रद्धा फल देत है, पाप हरन हो जायें ॥

( ९६ )

प्रेम गली है सांकरी, अति कठिन बतलाये ।

'नारायण' जो रंगा प्रेम में, बेड़ा पार लगाये ।।

( ९७ )

भगवान सब कुछ देत हैं, भगतों को जो चाहे ।

'नारायण' प्रेम नहीं देते अधिक, जहाँ तक पार बसाये ।।

( ९८ )

साधन सब से प्रेम बड़ा, कोई भाग्यवान ही पायें ।

'नारायण' कृपा जिन पर रहे, जीवन मुक्त हो जायें ।।

( ९९ )

बिना प्रेम भगती नहीं; ध्यान भजन चित लाये ।

'नारायण' सेवा भगवान की, दिन दिन प्रीति बढ़ाये ।।

— ✻ —

( १०० )

निष्काम सेवा जो करे, हरी बेग खुशी हो जायें।

'नारायण' प्रेम को क्या कहे, सनमुख तुम्हारे आयें ॥

( १०१ )

बैरभाव कभी न कीजिये, नारायण रूप जगतको जान ।

'नारायण' सुख शांति मिले, प्रेम भाव से कर पहचान ।।

( १०२ )

बैर करे से क्रोध उठे, दौड़ कचहरी जाये ।

'नारायण' पैसा बरबाद हो, असत का पाप कमाये ।।

( १०३ )

कचहरी कभी न जाइये, जहाँ तक पार बसाय ।

'नारायण' हानि लाभ होता रहे, पाप कर्म बचाय ।।

( १०४ )

पड़ोसी से बैर न कीजिये, हानि बहुत उठाय ।

'नारायण' जानकार हैं आपके, घरका भेदी लंका ढाय ।।

( १०५ )

साधु ब्राह्मण गऊ दुखी, जो जगत के पूज्य कहायें।

'नारायण' गुन औगुन नहीं देखये, धर्म गृहस्थ निभायें ।॥

— ✻ —

( १०६ )

नारायण सबमें रम रहे, द्वेष किससे कीजिये ।

'नारायण' सबसे प्रेम करो, जीवन सुफल कर लीजिये ।।

( १०७ )

निन्दा किसी की मत करो, अपने करम विचार ।

'नारायण' करेगा सो भरेगा, औगुन नहीं निहार ।।

( १०८ )

व्रत करने से पुन्य अधिक, शास्त्र में बतलाये ।

'नारायण' धर्म वैष्णव का, कभी न छोड़ा जाये ।।

( १०९ )

निरजला व्रत का फल अधिक, कष्ट नहीं कुछ पाये ।

'नारायण' जो बन सके नहीं, फल का आहार निभाये ।।

( ११० )

नित्त नेम छोड़ो नहीं, करो प्राणों से अधिक प्यार ।

'नारायण' आवागमन से बचो, झूठा सब संसार ।।

( १११ )

भजन करो जो नित्त हो, कमी न होने पाये ।

'नारायण' खबर नहीं इस देहकी, आज रहे कल जाये ।।

— ✱ —

( ११२ )

पापों का नाश हो उपवास से, शुद्ध मन हो जाय ।

'नारायण' भजन में मन लगे, ऊँच गती को पाय ।।

( ११३ )

भजन करन को जो कहें, समय नहीं बतलायें ।

'नारायण' वृथा भाषण करें, समय अमोल गमायें ।।

( ११४ )

मनुष जनम दुरलभ मिला, मिले न बारम्बार ।

'नारायण' समय न वृथा खोइये, भगवत चरण निहार ।।

( ११५ )

श्रीवृन्दावन का बास हो, दरशन करे दिन रात ।

'नारायण' बड़े भाग्य उनके जानिये, प्रेमकी लहर सुहात ।।

( ११६ )

परम आनन्द उठाइये रास का, रास मंडल में जाय ।

'नारायण' लीला नित देखके, दरश हरी का पाय ॥

( ११७ )

निज धाम भगती मात का, श्री वृन्दावन बललाये ।

'नारायण' वैष्णव धर्मकी पालना, गलीगली दिखलाये ।।

— ✻ —

( ११८ )

वैष्णव भगत का तीरथ बड़ा, श्री वृन्दावन को जान ।

'नारायण' मन्दिरों में जा दर्शन करें, दृष्टि प्रेम समान ।।

( ११९ )

श्रीवृन्दावनमें तुलसी ठाकुर, वैष्णवोंके घर में विराजमान ।

'नारायण' मंदिरोंमें भोग लगावें, परदेशी आवें धनवान ।।

( १२० )

रास का आनन्द जो ब्रज में, नहीं देखा कहीं और ।

'नारायण' भगती धर्म फैला रहे, वृन्दावन में सब ठौर ।।

( १२१ )

श्रीबिहारीजी की शोभा अधिक, वृन्दावन में दिखाये ।

'नारायण' झांकी झरोके से मन, आनंद मगन हो जाये ।।

( १२२ )

श्रीबिहारीजी दातार हैं, जो इच्छा मन लाये ।

'नारायण' ऐसे उदार चित, दूध भात से रिझाये ॥

( १२३)

जो श्रीबिहारीजी का भजन करे चित लाये ।

'नारायण' वेग खुशी हो जाय हैं, गौ लोक में जाये ।।

— ✱ —

( १२४ )

श्रीवृन्दावन में जो रहे, जीवन का सुख पाये ।

'नारायण' भजन प्रेम में मगन हो, हरी के गुन गाये ।।

( १२५ )

शुभ कर्म करते रहो, उत्तम भाग्य बनाये ।

'नारायण' प्रारब्ध बदले नहीं, कर लो कोटि उपाये ॥

( १२६)

जो कुछ लिखा है भाग्य में, पुरषारथ से होय ।

'नारायण' चिन्ता मत करो, वृथा समय न खोय ।।

( १२७ )

पुरुषारथ कीजे मन लगा, फल प्रारब्ध पै छोड़ ।

'नारायण' अच्छा बुरा न देखिये, हरिचरनन चित जोड़।।

( १२८ )

माया की लीला हो रही, मानो स्वपन समान ।

'नारायण' मोह न कीजे, छोड़ो देह अभिमान ।।

( १२९ )

किसी का अन्न गृहस्थ खायेंगे, धर्म कर्म फल जाये ।

'नारायण' अपनी कमाई से, मन चाहे सो खाये ।।

— ✱ —

( १३० )

खजाना भजन नष्ट न कीजे, अति कठिन से पाय ।

'नारायण' बने सो दीजे, साथ में वह ही जाये ॥

( १३१ )

मोह करे जो हरी से, अपनी गोद बिठाय ।

'नारायण' मोह कुटुम्ब का, नीच गती को पाय ।।

( १३२ )

पर-स्त्री गमन न कीजे, महा पाप का मूल ।

'नारायण' हाड मांस मल मूत्र में, गोता लगा न भूल ।।

( १३३ )

धरम पतनी का संग करे, मास धर्म जब आये ।

'नारायण' संतान करने के लिये, धर्म शास्त्र बतलाये ।।

( १३४ )

नारि पराई आपनी, मन विषयों से सदा हटाय ।

'नारायण' आग आग सब ऐकसी, हाथ लगे जल जाय ।।

( १३५ )

पर-स्त्री कभी न देखिये, पाप कर्म चित लाय ।

'नारायण' माता बहिन सब जानये, कभी न धोखा खाय ।।

— ✻ —

( १३६ )

क्रोध कभी ना कीजिये, बुद्धि भ्रष्ट हो जाय ।

'नारायण' भजन कर्म सब ही, अगनी क्रोध जलाय ।।

( १३७ )

क्रोध समय जल पीजिये, जगह छोड़ हट जाय ।

'नारायण' अगनी क्रोध की मिटे, तुरत शान्ति पाय ॥

( १३८ )

भजन करे से क्रोध मिटे, चाहे जैसा क्रोधी होय ।

'नारायण' नाम के परताप से, मलीनता मनकी धोय ॥

( १३९ )

क्रोधी सदा दुखी रहे, शान्ति कभी न पाये ।

'नारायण' संसार काज बिगड़ते रहें, झगड़ोंमें चित लाये ॥

( १४० )

पारस मनी जो चाहिये, ले लो प्रभु का नाम है।

'नारायण' अमर पदवी मिले, भगती बने निष्काम है ॥

( १४१ )

अहंकार किससे कीजिये, घट घट में हरी हैं।

'नारायण' रूप सबको मानिये, द्वेष से बरी हैं ॥

— ✻ —

( १४२ )

छोटा बड़ा क्या देखिये, संसार सब सुपन संमान ।

'नारायण' प्रारब्ध अपना भोगते, करना नहीं कभी गुमान ।।

( १४३ )

दुख सुख जगत के कुछ नहीं, जल का बबूला जान ।

'नारायण' यह आते जाते हैं, प्रारब्ध भोग खुशी से मान ।।

( १४४)

मनुष्य जन्म दुर्लभ मिला, समय न वृथा जाये ।

'नारायण' भजन संसार काज से, दोनों लोक सुख पाये ।।

( २४५ )

प्रभू को भूलो नहीं, जीवन जब तक होये ।

'नारायण' काज सब पूरन करे, बीज प्रेम का बोये ।।

( १४६ )

पहला धर्म गृहस्थ का, हरी सेवा भजन ही जान ।

'नारायण' कभी न विसारियो, स्वांसा के संग हो ध्यान ।।

( १४७ )

वाचक ज्ञानी नहीं चाहिये, कोरी बात बनाय ।

'नारायण' जो अभ्यास करे, उनको शीश नवाय ।।

— ✱ —

( १४८ )

ज्ञान भगती में भेद नहीं, साधन जुदा बताये ।

'नारायण' भगती सरल है, बेग हरी को पाये ।।

( २४६ )

मानसिक सेवा कीजिये, मन फिर कहीं न जाय ।

'नारायण' सेवा का आनन्द ले, प्रभु सन्मुख आय ।।

( १५० )

मनीराम जो थिर न हो, सेवा मानसिक न होय ।

'नारायण' उत्तमसाधन मन रोकनेका, मलीनतामनकीधोय।।

( १५१ )

छप्पन भोग लगाइये, सेवा मानसिक विधि से ।

'नारायण' भोग आरोगते देखिये, फूले रहो खुशी से ।।

( १५२ )

मानसिक सेवा प्रत्यक्ष से, अधिक देवे फल निरवान ।

'नारायण' आनंद दोनों लोक का, जाये बैकुंठ बैठ विमान ।।

( १५३.)

सेवा अपने गुरुदेव की कीजिये, तन मन धन को लगाये ।

'नारायण' उपदेश करें सो कीजिये, तभी मोक्ष को पाये ॥

— ✱ —

( १५४)

उधार कभी ना लीजिये, माने दण्ड समान ।

'नारायण' दुःख चिन्ता रहे, भजन घटे और ध्यान ।।

( १५५ )

उधार ने राजा रईस नष्ट किये, मेटे नाम निशान ।

'नारायण' सुख चाहे जो, छोड़ यह रोग महान ।।

( १५६ )

कलि में केवल कीर्तन, महा पुण्य बतलायें ।

'नारायण' नित कीजिये, हरी को वेग रिझायें ।॥

( १५७ )

कीर्तन प्रभु के सन्मुख करे, प्रेम से गाय बजाय ।

'नारायण' घर आपके आते रहें, निश्चय दिया बताय ।।

( १५८ )

कीर्तन से घर पवित्र हो, भगती बढ़े भगवान ।

'नारायण' लक्ष्मी आवे वहाँ, छूटे दरिद्रता अभिमान ॥

( १५९ )

जो कर्म करे विचार से, धोखा कभी न खाय ।

'नारायण' मिलेगा लाभ ही सदा, जीवन सुखी होजाय ।।

— ✱ —

( १६० )

'नारायण' संसार में, करलीजे दो काम ।

भजन करे शुभ करम सहित, हो जावे निष्काम ।।

( १६१ )

निष्काम कर्म का फल अधिक, दोनों लोक में जान ।

'नारायण' जो कर्म करे, धर्म ही अपना मान ॥

( ६६२ )

निष्काम कर्म जो कीजिये, भगवान रिनी हो जायें।

'नारायण' बिन मांगे मिले, फिर मान बड़ाई पायें ॥

( १६३)

धन्न भाग्य हैं माता पिता, कुटुम्ब में भगती होय ।

'नारायण' आप तरे कुटुम्ब सहित, सबके पापोंको धोय ॥

( १६४ )

कुल में कोई भगत हो, पीड़ी तारे इक्कीस ।

'नारायण' जन्म जन्म के पाप हरें, जै बोलो जगदीश ॥

( १६५ )

जो विचार निश्चय करे, कठिन सहज होजाय ।

'नारायण' उसे पूरा करें, बेड़ा बेग ही पार लगाय ।।

— ✻ —

( १६६ )

श्रद्धा जिसमें राखिये, फलीभूत हो जाय।

'नारायण' विश्वास प्रेम हृदय धारिये, हरिदर्शन को पाय ।।

( १६७ )

साधन बतलाये जीवनमुक्त के, अनुभव करके जान ।

'नारायण' सुख लोक परलोक का, निश्चय करके मान ।।

( १६८ )

॥ काष्ट मौन धारण करे, सब काज दुनियाँ त्यागिये ।

वासना को रोक कर, जीवन मुक्त हो जाइये ।।

( १६९ )

सहज समाधी चाहे, तो करे वासना त्याग ।

'नारायण' जीवनमुक्त हो जाओगे, उदय होंयेंगे भाग ।।

( १७० )

साधन जीवन मुक्त का, कठिन कभी न जानिये ।

'नारायण' कहा सो कीजिये, निश्चय करके मानिये ॥

( १७१ )

प्रभु की दयालुता को, सदा याद राखिये ।

'नारायण' कभी चिन्ता न कर, गुन हरी का गाइये ॥

— ✱ —

( १७२ )

दयालु कृपा अवश्य करें, भूलो नहीं उन्हें।

'नारायण' हरें दुःख आपके, सुख में रटो जिन्हें ॥

( १७३ )

भजते रहो भगवान को, मन लगे चाहे जाये।

'नारायण' नाम सुख रूप है, फल अवश्य ही पाये ॥

( १७४ )

बड़े भाग्य उस मनुष के, भजन करे नित्त नेम ।

'नारायण' धन्यवाद पिता मात को, हरी से राखे प्रेम ॥

( १७५ )

चार दिना की चांदनी, जीवन जल का फेन ।

'नारायण' कभी न भूलियो, याद रखो यह बेन ॥

( १७६ )

मनीराम की वैरता, हरी से हरदम होये ।

'नारायण' प्रेम माया से करें, बीज पाप का बोये ॥

( १७७ )

भजन ध्यान में जो समय, बीते है दिन रात ।

'नारायण' जीवन उसी को जानिये, और सब वृथा जात ।।

— ✱ —

( १७८)

मनुष देह जो मिला, मृत्यु लोक में आय ।
'नारायण' को याद करे, वैकुण्ठ धाम को पाय ॥

( १७९ )

ध्यान करे जो हरी का, खुले नेत्र भी होय ।
'नारायण' चलते-फिरते हर समय, मन मलीनता धोय ।।

( १८० )

ध्यान करे तो उस समय आसन सिद्ध लगाय ।
'नारायण' मन वश होत है, अनुभव किया बतलाय ।।

( १८१ )

नेत्र मूँद जो ध्यान करे, शब्द पड़े नहीं कान ।
'नारायण' मन शब्द पर लगे, छूटे तुरतहि ध्यान ।।

( १८२ )

ध्यान करे तो प्रतिमा, सनमुख अपने राख ।
'नारायण' रूप हृदय धर, याद रखो यह वाक ।।

( १८३ )

ध्यान करे जो मन लगे, परम आनन्द को पाय ।
'नारायण' हृदय बिराज रहें, प्रेम-बिन्दु नेत्र बहाय ॥

— ✻ —

( १८४ )

जूठन अपनी न दीजिये, पुन्न छीन हो जाय ।

'नारायण' थोड़ा-थोड़ा लीजिये, बचे न कोई खाय ।।

( १८५ )

भोजन से गौ गिरास निकालकर, पहिले किसी को दे ।

'नारायण' नीति धरम यह जानिये, नित्त नेम करे ।।

( १८६ )

कथा वारता कीरतन, नित्त करे जो कोय ।

'नारायण' घर उनके आयेंगे, निश्चय राखे जोय ।।

( १८७ )

कथा कीरतन जो करें, भगती प्रभु की होय ।

'नारायण' कुटुम्ब का कल्याण करें, बीज प्रेमका बोय ।।

( १८८ )

रात को भोजन कम करे, नींद कमी हो जाये ।

'नारायण' भजन ध्यान होवे अधिक, सुपनेमें प्रभु आये ।।

( १८९ )

नींद बुरी बलाय है, कर्म धर्म सब खोय ।

'नारायण' खानपान हो सात्त्विक, कभी दुखी न होय ।।

— ✻ —

( १९० )

जो हरी भक्त की सेवा करे, फल देत प्रभु तत्काल ।

'नारायण' सेवक के रिनी होंय हैं, भगतों के रक्षपाल ।।

( १९१ )

विषयों में जो मन गया, हर से प्रीति न होये ।

'नारायण' स्वाद जिह्वा नष्ट कर, जीवन वृथा ही खोये ।।

( १९२ )

परमारथ जो करत हैं, प्रेमी प्रभु के जान ।

'नारायण'भाग्यशाली उनकोजानिये, करें नहीं अभिमान ।।

( १९३ )

मात पिता से प्रेम नहीं, पतनी के बने गुलाम ।

'नारायण' ऐसे मूरखजनों का, अच्छा नहीं परिनाम ॥

( १९४ )

साधु सेवा, तन मन धन से कीजे निष्काम ।

'नारायण' लक्ष्मी अधिक मिले, अंत देत निजधाम ।।

( १९५ )

सन्त मिलन को जाइये. जगत वासना त्याग ।

'नारायण' उपदेश उनका मानिये, उदय होयेंगे भाग ।।

— ✱ —

( १९६ )

पर-स्त्री गमन न कीजिये, नीच योनी में जायें।

'नारायण' छन भंगुर आनंद को, जनम जनम दुख पायें ।॥

( १९७ )

कुआरी कन्या से भोग करें, सर्प योनी में जाये ।

'नारायण' हजारवर्ष भोगा करे, श्रीमद्भागवत बतलाये ।।

( १९८ )

पंच तत्व का पुतला, काला पीला और सफेद ।

'नारायण' शोभा क्या देखिये, केवल चाम का भेद ।।

( १९९ )

हरी के प्रेमी भगत जन, भजन करें निष्काम ।

'नारायण' उनके हों रिनी, बिन कहे करें सब काम ।।

( २०० )

जो जन सेवा अनन्य भगत, करें सदा निष्काम ।

'नारायण' सौ गुना फल देत, कहें भागवत में घनश्याम ।।

( २०१)

संसार दुःखी कलिकाल में, साधु के ढिंग जाय ।

'नारायण' दुःख अपना कहत हैं, वृथा समय न गंवाय ।।

— ✱ —

( २०२ )

स्वारथ की दुनियाँ भई, कोई किसी का नाँय ।

'नारायण' अपना भला ही चाहें, सब और भाड़ में जाँय ॥

( २०३ )

पिछले जन्म का लेन देन, जो भी किसी का होय ।

'नारायण' बेटा बेटी जन्में यहाँ, खाता उधार का धोय ।।

( २०४ )

उधार का खाता बहुत बुरा, कई जन्म नहीं छूटे ।

'नारायण' बचते रहो इससे सदा, चाहे जगत् सब रूठे ।।

( २०५ )

सेवा किसी से नहीं कराइये, जितना भी कोई चाहे ।

'नारायण' सेवा अपनी आप करे, धर्म कर्म लुट जाये ॥

( २०६ )

गुरुदेव का दरजा बहुत बड़ा, ईश्वर समान ही जान ।

'नारायण' दरश तुम्हें दिखायेंगे, करो तनमनधन कुरबान ।।

( २०७ )

गुरुदेव आज्ञा सिर चढ़ाइये, सेवा अधिक यह जान ।

'नारायण'जो साधना तुम्हें करायेंगे, उसीसे हो कल्यान ।।

— ✱ —

( २०८ )

गुरुदेव से कुछ नहीं माँगिये, संसारी वासना त्याग ।

'नारायण' सुख परलोक का मिले, उदय होयेंगे भाग ॥

( २०९ )

गुरुदेव को जानिये डाक्टर, दुख आवागमन मिट जाय ।

'नारायण' नामको बूटी पीजिये, लोक परलोक सुख पाय ।।

( २१० )

गुरुदेव की आज्ञा पर चले, दें अपना निज ज्ञान ।

'नारायण'चित्तप्रसत्र उनका राखिये, सबकुछ मिलेयजमान

( २११ )

पापी जीव वे जानिये, भजन न करता होय ।

'नारायण' मुख देखे पाप लगे, जीवन वृथा ही खोय ।।

( २१२ )

माया लीला करत करत फँसे, मोह जाल में आय ।

'नारायण' सुध भूली परलोक की, यमदूतों से पकड़ाय ।।.

( २१३ )

प्रथम धर्म गृहस्थ का, प्रभु याद करे चित लाय ।

'नारायण' शुभकर्म कर संसार में, जन्म जन्म सुख पायं ।।

— ✱ —

( २१४ )

संसार कर्म जो भी करे, प्रथम करे विचार ।

'नारायण' बुरे कर्म पर पछताइये, सनमुख प्रभु निहार ।।

( २१५ )

साधु संगत नित कीजिये, सेवा करे निष्काम ।

'नारायण' उपदेश हृदय घर, अभ्यास का शुभ परिणाम ।।

( २१६)

व्योपार कलियुग में चला, सट्टे जुए का काम ।

'नारायण' बरबाद हुआ संसार, हुये गरीब बुरा परिणाम ।।

( २१७ )

सनातन धर्म पर दुख पड़े, कलियुग का प्रभाव ।

'नारायण'भगती कभी न छोड़िये, दृढ़ रखो सदा सुभाव ।।

( २१८ )

मूरती पूजा के बैरी हुए, मन्दिर में हरिजन आये ।

'नारायण' धर्म न अपना त्यागिये, शीश चाहे कट जाये ।।

( २१९ )

विधवा स्त्री का धर्म है, ठाकुर सेवा में लग जाय ।

'नारायण' पति अपना मानके, भवसागर से तरजाय ।।

— ✱ —

( २२० )

पिछले जन्म के पाप से, विधवा स्त्री दुख पाय ।

'नारायण' जन्म यहीं सुधारले, नहीं तो फिर पछताय ।।

( २२१ )

संसार जो कुछ दीखता, नारायण रूप' सब जान ।

'नारायण' बैर भाव को त्याग के, सर्वव्यापी मान ॥

( २२२ )

कर्ता अकर्ता जगत में, नारायण ही को मान ।

'नारायण'लीला सुपन समान, धोखे में नहीं पड़ो सुजान ॥

( २२३ )

भजन शुभ कर्म जो भी करो, भेंट करो भगवान ।

'नारायण' फल की इच्छा त्यागदो, रखो ना हृदय गुमान ।।

( २२४ )

वृथा भाषण त्याग के, शुभ कर्म भजन करते रहो ।

'नारायण' नामको मत भूलना कभी, चलते फिरतेभी कहो

( २२५ )

'नारायण' दास कुछ लिखा नहीं, प्रभु दिया बतलाय ।

भूल चूक कहीं होय तो, लेना उसे सुधराय ॥

— ✱ —

॥ हरिः ॐ ॥

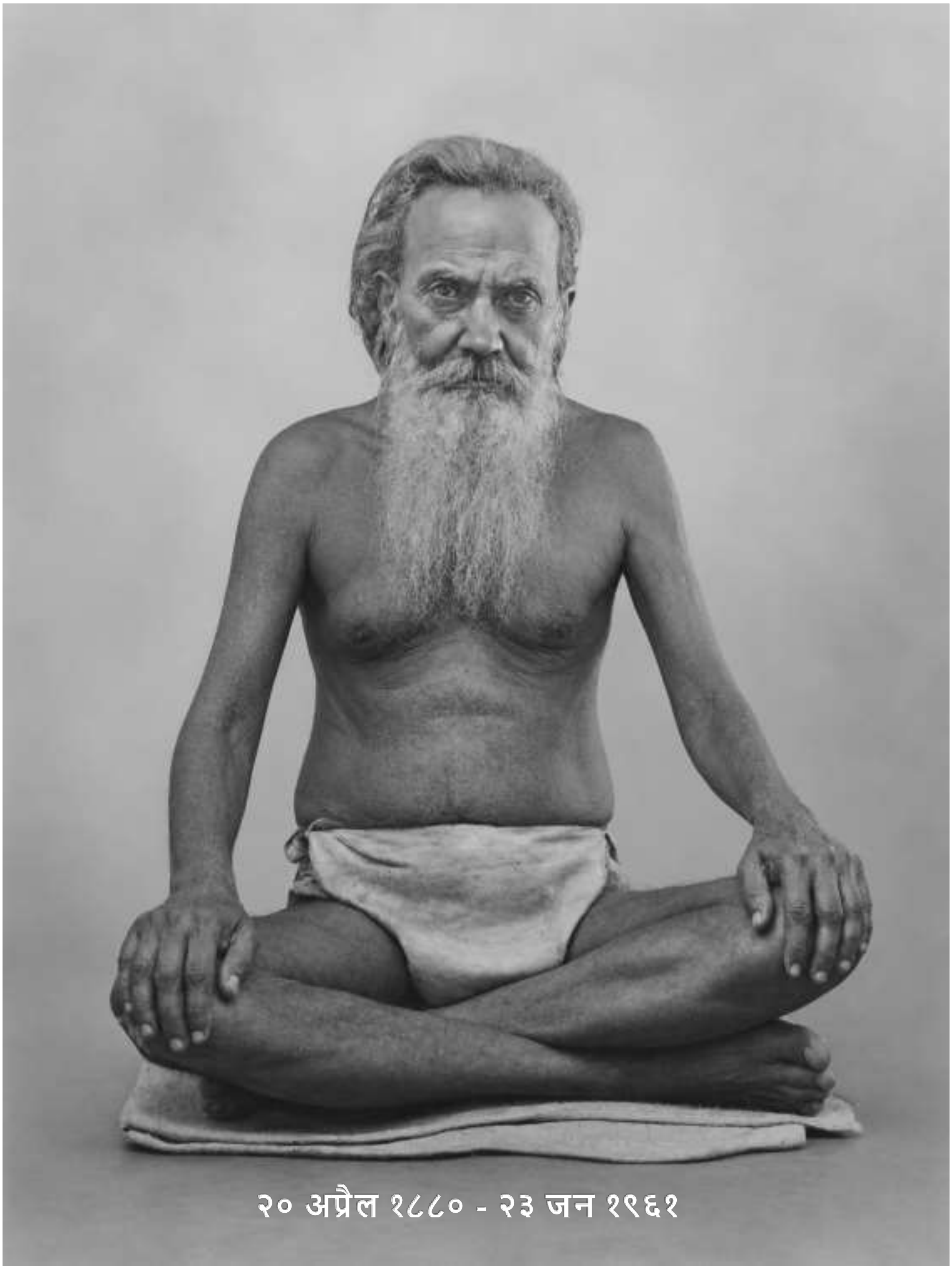


**20 Apr 1880 – 23 Jun 1961**

— ✱ —